प्रातः क्लास 8/9/68 ओमशान्ति पिताश्री शिवबाबा याद है?

ओमशान्ति। बच्चे बैठे हुए हैं। इसको कहा जाता है याद की यात्रा। बाप कहते हैं योग अक्षर काम में लाओ नहीं। बाप को याद करो। वह है आत्माओं का बाप, पतित पावन परमपिता। उस पतित पावन बाप को ही याद करना है। बाप कहते हैं देह के सभी धर्म छोड़ एक बाप को याद करो। कहते हैं ना आप मुये तो मर गई दुनिया। देह सहित देह के जो भी सम्बन्ध हैं, जो भी देखने में आते हैं उनको याद न करो। एक बाप को ही याद करो तो तुम्हारे पाप जल जावेंगे। तुम जन्म–जन्मान्तर के पापात्माएँ हो ना। यह है ही पापात्माओं की दुनिया। सतयुग है पुण्यात्माओं की दुनिया। अभी पाप सभी कटकर सच कैसे जमा हो। बाप की याद से ही जमा होगा। आत्मा में मन–बुद्धि है ना। तो आत्मा को बुद्धि से याद करना है। बाप कहते हैं तुम्हारे जो भी मित्र–सम्बन्धी आदि हैं उन सबको भूलो। वह सब एक–दो को दुख देने वाले हैं। एक तो विकारी काँटा बनते हैं जो काम कटारी चलाते हैं। दूसरा फिर पाप क्या करते हैं, बाप को कुत्ते–बिल्ले, ठिक्कर–भित्तर में कह देते। जो बाप सर्व की सद्गति दाता है, बच्चों को बेहद का सुख देते हैं अर्थात् स्वर्ग का मालिक बनाते हैं। यह पाठशाला है ना। तुम आते ही हो पढ़ने। यह है तुम्हारी एम ऑबजेक्ट। और कोई ऐसे कह न सके। तुम जानते हो अभी हमको पवित्र बन पवित्र दुनिया का मालिक बनना है। हम ही विश्व के मालिक थे। पूरे 5000 वर्ष हुए। देवी–देवताएँ विश्व के मालिक थे ना। कितना ऊँच पद है। जरूर यह बाप ही बनावेंगे। बाप को ही परमात्मा भी कहते हैं। उनका असली नाम है शिव। फिर बहुत नाम रख दिये हैं। जैसे बम्बई में बबूलनाथ कहते हैं। अर्थात् काँटों के जंगल को फूलों का बगीचा बनाने वाला। नहीं तो असली नाम उनका है ही 'शिव'। इनमें प्रवेश करते हैं तब भी नाम शिव ही है। तुमको इनको याद नहीं करना है। यह तो देहधारी है। तुमको याद करना है विदेही को। तुम्हारी आत्मा जो पतित बनी है उनको पावन बनाना है। कहते भी हैं महानात्मा, पापात्मा। महान परमात्मा नहीं कहते हैं। अपन को परमात्मा वा ईश्वर कोई कह न सके। कहते ही हैं महात्मा। अर्थात् पवित्र आत्मा। सन्यासी सन्यास करते हैं इसलिए पवित्र आत्मा हैं। बाप ने समझाया है वह भी पुनर्जन्म सब लेते हैं। देहधारियों को पुनर्जन्म जरूर लेना ही है। विख से जन्म ले फिर जब बड़े बालिग बन जाते हैं तो सन्यास लेते हैं। देवताएँ तो ऐसे नहीं करते हैं। वह तो एवर पवित्र हैं। उनको तो गृहस्थ घर में जन्म लेना पड़े। उन्हें कहा ही जाता है हद के सन्यासी। महान–आत्मा। न कि महान परमात्मा। बाप ने समझाया है जो अपन को परमात्मा कहलाये अपन को पूजा कराते हैं वह हिरण्यकश्यिपु जैसे दैत्य हैं। यह है आसुरी सम्प्रदाय। अभी तुम आसुरी से दैवी सम्प्रदाय बनाते हैं। दैवीगुण धारण करने से ही दैवी सम्प्रदाय बनेंगे। आसुरी गुणों वाला है आसुरी सम्प्रदाय। दैवी सम्प्रदाय रहते हैं सतयुग में। आसुरी सम्प्रदाय रहते हैं कलियुग में। अभी है संगमयुग। अभी है संगमयुग। अभी तुमको बाप मिला, कहते हैं अब फिर तुमको दैवी सम्प्रदाय बनना है जरूर। तुम यहाँ आये ही हो दैवी सम्प्रदाय बनने लिए। दैवी सम्प्रदाय में अथाह सुख है। वह है सुख की दुनिया, कलियुग है दुख की दुनिया। पहला दुख है एक–दो को काम कटारी चलाना। काम कटारी से कोस करना। इस आसुरी दुनिया को कहा ही जाता कोस–घर। हिंसा करते हैं ना। देवताएँ तो हैं अहिंसक। हिंसक बनते हैं तो बाप को भूल जाते हैं। बाप कहते हैं मीठे2 रूहानी बच्चों बाप को याद करो। तुम्हारे जो भी गुरुलोग हैं वह सभी देहधारी हैं। अभी तुम आत्माओं को बाप परमात्मा को याद करना है। वह बाप है परम सुख देने वाला, दुखहर्ता–सुखकर्ता। सुख तब मिलेंगे जब तुम पुण्यात्मा बनेंगे। 84 जन्मों के बाद ही तुम पापात्मा बन जाते हो। अभी तुम जमा करते हो, घाटे को खत्म करते हो योगबल से। इस याद की यात्रा से ही तुम विश्व के मालिक बनते हो। तुम विश्व के मालिक तो थे सही ना। फिर वह कहाँ गये। यह भी बाप ही बताते हैं तुमने 84 जन्म लिए हैं सूर्यवंशी, चन्द्रवंशी, वैश्यवंशी, शूद्रवंशी। कहते भी हैं भक्ति का फल भगवान देते हैं। भगवान कोई देहधारी को नहीं कहा जाता। भगवान तो है निराकार शिव। उनकी शिव जयन्ती, शिवरात्रि भी मनाते हैं तो जरूर आते हैं ना; परन्तु कहते हैं मैं तुम्हारे सदृश्य

जन्म नहीं लेता हूँ। मुझे शरीर का लोन लेना पड़ता है। मुझे अपना शरीर नहीं है। अगर होता तो उनका(उनको) होता। ब्रह्मा नाम तो इनका अपना है ना। इसने सन्यास किया है तब इनका नाम ब्रह्मा रखा है। तुम हो ब्रह्माकुमार–कुमारियाँ। नहीं तो ब्रह्मा कहाँ से आया। ब्रह्मा वल्द? क्योंकि ब्रह्मा भी क्रियेशन है ना। क्रियेटर तो एक ही है। ब्रह्मा वल्द शिव। शिवबाबा अपने बच्चे में प्रवेश कर इन द्वारा तुमको ज्ञान देते हैं। ब्र0वि0शं0 भी इनके बच्चे हैं। निराकार बाप के सभी बच्चे निराकार आत्माएँ। जो फिर यहाँ शरीर धारण कर पा(र्ट) बजाते हैं। बाप कहते हैं मैं आता हूँ पतितों को पावन बनाने। मैं इस शरीर का लोन लेता हूँ। शिवभगवानुवाच है ना। कृष्ण को भगवान नहीं कह सकते। भगवान तो एक ही है। कृष्ण की महिमा ही अलग है। उनको कहा जाता है– सर्वगुण सम्पन्न 16 कला सम्पूर्ण मर्यादा पुरुषोत्तम अहिंसा परमोधर्म वाला पहला नम्बर का देवता। राधे–कृष्ण हैं जो स्वयंवर बाद ल0ना0 बनते हैं; परन्तु यह कोई भी नहीं जानते हैं। राधे–कृष्ण का किसको भी पता नहीं है। वह फिर कहाँ चले गये? राधे कृष्ण ही स्वयंवर बाद फिर ल0ना0 बनते हैं। दोनों अलग–2 महाराजाओं के हैं। वहाँ अपवित्रता का नाम नहीं; क्योंकि 5 विकारों रूपी रावण ही नहीं, है ही राम–राज्य। इनको कहा जाता है रावण राज्य।

अभी बाप आत्माओं को कहते हैं कि मुझे याद करो तो तुम्हारे पाप कट जावेंगे। तुम सतोप्रधान थे, अभी तमोप्रधान हो। घाटा पड़ा है। फिर जमा करना है। भगवान को भी व्यापारी कहा जाता है। कोई बिरला ही उनसे व्यापार करे। जादूगर भी उनको कहते हैं, कमाल करते हैं जो सारी दुनिया को सद्गति कर देते हैं। सभी मुक्ति–जीवनमुक्ति देते हैं। जादू का खेल है ना। मनुष्य, मनुष्य को दे न सके। तुम 63 जन्म भक्ति करते आये हो। कोई ने सद्गति को पाया है? कोई है जो सदगति दे? हो नहीं सकता। एक भी वापिस जा नहीं सकता। बेहद का बाप ही आकर सभी को वापस ले जाते हैं। कलियुग में अनेक राजाएँ हैं। वहाँ तो तुम थोड़े ही राज्य करते हो। बाकी सभी आत्माएँ मुक्तिधाम में चली जाती हैं। तुम जाते हो जीवन मुक्ति वाया मुक्तिधाम। बाकी सभी मुक्ति में। यह चक्र फिरता रहता है। अभी तुम आत्माओं को दर्शन हुआ है0 इस सृष्टि चक्र का, रचयिता और रचना के आदि–मध्य–अन्त का। और कोई भी इस ज्ञान को नहीं जानते हैं। तुम ही इस ज्ञान से नर से ना0 बनते हो। देवताओं की राजधानी स्थापन हो गई फिर तुमको ज्ञान की दरकार नहीं रहती। आधा कल्प ज्ञान, आधा कल्प है भक्ति। भक्तों को भगवान ने फल दिया है, आधा कल्प सुख का। फिर रावण–राज्य में दुख शुरू होता है। आस्ते–2 सीढ़ी उतरते हैं। तुम सतयुग में हो तो भी एक दिन जो बीता सीढ़ी नीचे उतरना ही होता है। तुम 16 कला सम्पूर्ण बनते हो। फिर त्रेता में दो कला कम हो जाती है। सीढ़ी उतरते ही रहते हैं। सेकण्ड व सेकण्ड टिक–2 होती जाती है। सेकण्ड, मिनट, घंटे, दिन, वर्ष बीतते–2 इस जगह आकर पहुँचे हो। वहाँ भी तो ऐसे ही घड़ियाँ बीतती जावेंगी। हम सीढ़ी चढ़ते हैं फट से। तेरे भाणे सर्व का भला। फिर सीढ़ी उतरते हैं जूँ .....। बाप कहते हैं मैं सभी को सद्गति करने वाला हूँ। मनुष्य मनुष्य की गति–सदगति कर न सके; क्योंकि वह (विख) से पैदा होते हैं। पतित हैं। वहाँ तो पतित कोई होता ही नहीं। वास्तव में कृष्ण को ही सच्चा महात्मा कह सकते हैं। यह महात्मा लोग फिर भी विख से जन्म लेते हैं, पीछे सन्यास करते हैं। वह तो है देवता। देवताएँ सदैव पवित्र हैं। उनमें कोई विकार नहीं होता। उनको ही कहा जाता है निर्विकारी दुनिया। इनको कहा जाता विकारी दुनिया। नो प्युरिटी। चलन कितनी खराब है। देवताओं के चलन तो बड़े ही अच्छे होते हैं। सभी उनको नमस्ते करते हैं। कैरेक्टर्स उन्हों की अच्छी है तब तो अपवित्र मनुष्य उन पवित्र देवताओं के आगे माथा टेकते हैं। अभी तो भारत में सभी करैक्टर्स खराब है। लड़ना–झगड़ना क्या–2 लगा पड़ा है। बड़ा हंगामा है। अभी तो र(हने) की जगह भी नहीं। चाहते हैं मनुष्य कम हों; परन्तु यह तो बाप की काम है। सतयुग में बहुत ही थोड़े मनुष्य होते हैं। इतने सभी शरीरों की होलिका हो जाती। बाकी सभी आत्माएँ चली जाती है। अपने स्वीट होम। सजा तो नम्बरवार भोगते हैं। जो पूरा पुरुषार्थ कर विजय माला का दाना बनते हैं वह सजाएँ से छूट जाते

माला एक की तो नहीं होता है ना। जिसने उन्हों को ऐसा बनाया है वह फूल है। फिर है मेरु। प्रवृत्ति मार्ग है ना। तो जोड़ियों की माला है। सिंगल की माला नहीं होती। सन्यासियों की माला होती नहीं। वह है ही निवृत्ति मार्ग वाले। वह प्रवृत्ति मार्ग वालों को ज्ञान दे न सके पवित्र बनने लिए। उनका है ही हद का सन्यास। वह है ही हठयोग। यह है राजयोग। राजाई प्राप्त करने लिए तुमको बाप सिखलाते हैं। हर 5000 वर्ष बाद बाप आते हैं। आधा कल्प तुम राज्य करते हो सुख में। फिर रावण–राज्य होता है तो तुम आस्ते–2 दुखी होते जाते हो। इनको कहा ही जाता है सुख–दुख का खेल। बाप आकर पाण्डवों को जीत पहनाते हैं। अभी तुम हो पण्डे घर जाने की यात्रा कराते हो। यह यात्रा तो मनुष्य जन्म–जन्मान्तर करते आये है। अभी तुम्हारी यात्रा है घर जाने की। बाप आकर सभी को मुक्ति–जीवनमुक्ति का रास्ता बताते हैं। तुम जीवनमुक्ति में जाते हो बाकी सभी मुक्ति में चले जाते हैं। हाहाकार के बाद फिर जयजयकार होगी। रक्त की नदियाँ बहकर फिर घी की नदियाँ बहती हैं। अभी है ही कलियुग का अन्त। आफतें तो बहुत ही आनी हैं। तुम फिर उस समय याद की यात्रा में रह नहीं सकेंगे; क्योंकि हंगामा बहुत हो जावेगा। इसलिए बाप कहते हैं अभी याद की यात्रा को बढ़ाते रहो तो पाप भस्म हो जावें और फिर जमा भी करो। सतोप्रधान तो बनो। सतोप्रधान बनने की युक्ति पतित–पावन परमपिता परमात्मा ही आकर बताते हैं। बाप कहते हैं मैं हर कल्प के पुरुषोत्तम संगमयुग पर आता हूँ। यह तो बहुत छोटा तुम ब्राह्मणों का युग है। ब्राह्मणों की निशानी, चोटी होती है। ब्राह्मण देवता.....यह चक्र फिरता ही रहता है। ब्राह्मणों का बहुत छोटा कुल होता है। 50/60 वर्ष में बाप आकर तुमको पढ़ाते हैं। तुम बच्चे भी हो, स्टुडेन्ट भी हो, फॉलोवर्स भी हो, एक के ही। ऐसा कोई मनुष्य होता नहीं जो बाप भी हो, शिक्षा देने वाला टीचर भी हो। सृष्टि के आदि–मध्य–अन्त का ज्ञान देता हो फिर साथ भी ले जाये। ऐसा कोई मनुष्य हो न सके। यह बातें अभी तुम समझते हो। सतयुग में भी पहले–2 तो बहुत छोटा झाड़ होता है। बाकी सभी शान्तिधाम में चले जावेंगे। बाप को ही कहा जाता है सर्व की सद्गति दाता। बाप को बुलाते भी हैं कि हे पतित पावन आओ और दूसरे तरफ फिर कहते हैं, परमात्मा सर्वव्यापी है। ठिक्कर–भित्तर में है। बेहद के बाप को अपकार करते हैं ना। उनको सर्वव्यापी कहना, कच्छ अवतार–मच्छ अवतार कह देते। 84 लाख जन्म तो छोड़ो; परन्तु उनसे भी जास्ती कण–2 में, भित्तर–2 में कह देते। उनको तो कोई हिसाब ही न हो सके। यह तो पाप करते हैं ना। बाप जो विश्व का मालिक बनाते हैं उनकी ग्लानि करते हैं। उनको पत्थर–भित्तर में कह देते। तब बाप कहते हैं यदा हि यदा.....भारत में ही धर्म की ग्लानि होती है। बाप को भित्तर–ठिक्कर में डाल दिया है तो तुम्हारी भी बुद्धि पत्थर हो गई है। मुझे सभी गाली देते हैं। यह है रावण का संगदोष। सत का संग तारे, कुसंग बोरे। रावण राज्य शुरू होता है तो गिरने लग पड़ते हो। बाप आकर तुम्हारी चढ़ती कला करते हैं। बाप आकर मनुष्यों को देवता बनाते हैं। तो सर्व का भला हो जाता है। अभी तो सभी यहाँ हैं। बाकी भी जो रहे हुए हैं वह आते रहते हैं। जबतक निराकारी दुनिया से सब आत्माएँ आ जावेंगी, तब तक तुम इम्तहान में भी नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार पास हो जावेंगे। इनको कहा ही जाता है रूहानी कॉलेज। रूहानी बाप रूहानी बच्चों को पढ़ाते हैं। आत्मा ही एक शरीर छोड़ दूसरा लेती है। रावण राज्य आया तो फिर शरीर छोड़ कोई अपवित्र राजा बने और पवित्र देवताओं के माथा टेकने लगे। आत्मा ही पतित अथवा पावन बनती है। आत्मा पतित है तो शरीर भी पतित मिलता है। सच्चा सोना में खाद पड़ती है तो खाद का जेवर हो जाता है। अभी आत्मा से खाद निकले कैसे? योगाग्नि चाहिए ना। उनसे ही तुम्हारे विकर्म विनाश हो जावेंगे। चाँदी, ताँबा लोहा, पड़ गई है। यह है खाद। गोल्डन एज से आयरन एज में आ गये। वह खाद निकले कैसे? यह है योगाग्नि। ज्ञान चिक्षा पर बैठते हो। आगे थे काम चिक्षा पर। बाप ज्ञान चिक्षा पर बिठाते हैं। सिवाय ज्ञान सागर बाप के और कोई ज्ञान चिक्षा पर बिठा न सके। मनुष्य भक्ति में अन्धश्रद्धा से कितनी पूजा आदि करते हैं। किसको भी जानते नहीं। अभी तुम सभी ..... जान गये हो। ....पूजा की बात तो खत्म हो जाती है। जब रावण राज्य होता .....कहते हैं।

तुम शास्त्रों को नहीं मानते हो। बोलो अरे हम तो सबसे जास्ती शास्त्र पढ़े हैं। सबसे जास्ती भक्ति की है। पहले–2 शिव की भक्ति की। फिर सभी की करते आये। जिसकी शुरू में पूजा करते थे वही अभी आया है भक्ति का फल देने। जिन्होंने शुरू से लेकर पूरी भक्ति की है वही फिर ज्ञान उठावेंगे। तो नबज देख सकते हो पुराने भक्त हैं वा बीच का है या लास्ट का भक्त है। पहले–2 भक्ति तुमने शुरू की है। तो जरूर ज्ञान भी पहले–2 तुम ही लेंगे। जो सतयुग त्रेता में देवी–देवताएँ थे वही फिर अभी बनेंगे। तुम ही स्वर्ग में थे। अभी नर्क में हो। तुमने ही सबसे जास्ती जन्म लिये हैं। इस्लामी, बौद्धी आदि कम जन्म लेंगे। हिसाब है ना। सभी तो 84 जन्म नहीं लेंगे। मनुष्य तो कितना झूठ बोलते हैं। यह झूठ कहाँ से आई? भक्ति मार्ग के शास्त्रों से। मेरे हाथों में तो कोई शास्त्र है नहीं वह है ही ज्ञान सागर, मनुष्य सृष्टि का बीजरूप। झाड़ यहाँ वृद्धि को पाता रहता है। तुम जानते हो वह है वृक्षपति। वह तुमको पढ़ा रहे हैं। वह है ज्ञान का सागर, शान्ति का सागर। ल0ना0 की महिमा अलग है। इनको सर्वगुण सम्पन्न. ..... कहा जाता है। इनमें कोई ज्ञान नहीं है। ज्ञान से यह बने हैं। फिर जब 84 का चक्र पूरा हो तब ज्ञान मिले। इस समय सभी काम चिक्षा पर बैठ काले बन पड़े हैं। पावन बन फिर पतित बन पड़ते। गुरुनानक ने भी कहा है ना असंख्य चोर हराम खोर... .. बाप कहते हैं सच बाप को याद करो। जप साहब को तो सुख मिले। साहब तो सदैव सुखधाम का मालिक बना देंगे। मामेकम् याद करो तो विश्व का मालिक बनेंगे। दुख हर्ता–सुख कर्ता भी वह एक है ना। तुम जानते हो हम बेहद के सुख का वरसा लेते हैं फिर दुख खत्म हो जावेगा। बाकी थोड़ा समय है। यह वही समय है जिसका जिक्र शास्त्रों में भी है। (मुसलों की बात) बाप कहते हैं यह ही है झूठी दुनिया। सच की रत्ती नहीं। गीता को भी झूठी कर दी। पहले–2 झूठ बाप कहते हैं शिवभगवानुवाच, वह कहते कृष्णभगवानुवाच। अब मैं बाप वह बच्चा। मेरे बायोग्राफी में बच्चे का नाम डाल दिया है। इस भूल के कारण ही भारत कंगाल बन गया है। गीता पढ़ते2 नीचे ही गिरते जाते हैं। फिर गालियाँ भी देते हैं कि ठिक्कर–भित्तर में है। कण2 में है। पहले तो कहते थे युगे2 अवतार लेते हैं। फिर 24 अवतार। कच्छ–मच्छ अवतार ,परशुराम अवतार अभी तो कितने तमोप्रधान बन गये हैं। इसलिए बाप आकर डोरापा देते हैं। तुम मुझे भी गालियाँ दे कितना अपकार करते हो। फिर तुम मुझे गालियाँ देंगे। मैं आकर उपकार करूँगा। यह ड्रामा बना हुआ है। उनको समझाना है। इसकी आयु ही 5000 वर्ष है। लाखों वर्ष की तो बात ही नहीं। यह पढ़ाई है। एमआबजेक्ट ही है यह बनना। सत्य ना0 की कथा सुनाते हैं ना। यह है नर से ना0 बनने की कथा। तुम सच्च... नर से ना0 बनते हो। बाकी वह तो हैं भक्तिमार्ग की झूठी कथाएँ। शास्त्र पढ़ते2 आकर इस हालत में पहुँचे हैं। वहाँ तो शास्त्र होते ही नहीं। भक्ति का नाम निशान नहीं। आधा कल्प है ज्ञान दिन, आधा कल्प है भक्ति रात। बहुत करके तुमको कहते हैं ब्रह्मा को क्यों बिठाया है। अरे भगवानुवाच मैं उनमें प्रवेश करता हूँ वह बहुत जन्मों के अन्त वाला है। पूरे 84 जन्म लिये हैं। इनको ही पहले जन्म में जाना है। भगवान तो मनुष्य को क्या देवताओं को भी नहीं कहा जाता। घोर अंधियारे में मनुष्य कितना है। बाप आया हुआ है संगम पर और वह लोग समझते हैं कलियुग अजन 40 हजार वर्ष पड़े हैं। तब बाप कहते हैं कौरव कांग्रेस कुम्भकरण के नींद में सोये पड़े हैं। यहाँ बाप आ गया है। कल्प पहले भी आया था। अज्ञान की कुम्भ करण के नींद में ही खत्म हो जावेंगे। बेहद के बाप का निश्चय हुआ तो वरसे के भी हकदार होंगे; परन्तु माया हरा देती है। युद्ध है ना। तुम ..... करते हो माया भुला देती है। बाप को भूलने से ही पाप हो जाते हैं। नीचे ऊपर होते रहते हैं। क्रिमनल दृष्टि न रहे। सिवील आई रहे। भाई2 समझें। यह है मेहनत। कोई भी पाप न करना है। मेहनत बिगर विश्व की बादशाही मिलेगी कैसे। यह गुप्त मेहनत है। भल गृहस्थ व्यवहार में रहो; परन्तु कमल फूल समान पवित्र रहो। फिर मुझे याद करेंगे तो जन्म–जन्मान्तर के पाप कट जायेंगे। इसको योगबल कहा जाता है। योग से तुम विश्व के मालिक बनते हो। बाहुबल से विश्व का मालिक बन न सके। बाकी साइंस से अपना ही विनाश करते हैं। वह भी कहते हैं हमको कोई प्रेरक है जो हम अपने मौत के लिए बनाते हैं। यह भी ड्रामा में पार्ट है। अच्छा बच्चों को गुडमार्निंग।